Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2024/13.1.42

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2024); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:13, ISSUE:1(2), JANUARY: 2024
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2024
Publication Date:30th January 2024
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

वैविध्यपूर्ण जीवनानुभवों से लैस उदय प्रकाश का कथा साहित्य

डॉ. बाबूलाल बैरवा
सह आचार्य – हिन्दी
स्व.पं.न.कि.श. राजकीय महाविद्यालय, दौसा (राज.)

उदय प्रकाश चर्चित कवि, कथाकार, पत्रकार और फिल्मकार हैं। उदय प्रकाश हिन्दी साहित्य और संसार के प्रतिष्ठित और चर्चित कथाकार हैं। इनकी रचनाएं न केवल भारतीय भाषाओं, बल्कि कई विदेशी भाषाओं में अनुदित होकर लोकप्रिय हुई। उदय प्रकाश की कहानियों में जहां कविताओं जैसी रवानगी और सरसता है, वहीं वे समय की विसंगतियों की ओर बहत गहराई से ध्यान आकर्षित करती हैं।

उदय प्रकाश ने अपने लेखन का आरम्भ एक काव्य कें रूप में किया, जिसमें उनको ख्याति प्राप्त हुई। परंतु काव्य रचना करने के साथ–साथ कहानियों में भी काफी नाम कमाया है। उन्होंने कहानी के बोध और विन्यास को बदलते हुए उसे विलक्षण प्रभावों से सम्पन्न कर दिया। उन्होंने अपने परिवेश को सूक्षम दृष्टि से देखा है राजनीति पक्ष ने उदय प्रकाश के चित को अपनी ओर आकर्षित किया है। एक घर की राजनीति से लेकर अर्न्तराष्ट्रिय स्तर तक की राजनीति पर उनकी पैनी दृष्टि रही है। उदय प्रकाश राजनीति के हर छोटे से छोटे पहलू पर अपनी नजर रखते हैं। और उनको अपनी कविताओं के माध्यम से हमारे समक्ष रखते हैं। उनकी रचनाओं का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि साहित्यकार ने देश – विदेश में घटित होने वाली सभी घटनाओं को अपने साहित्य में स्थान दिया है।

उदय प्रकाश की कहानियों ने कथा साहित्य के परंपरागत पाठ को अपने आख्यान और कल्पनात्मक विन्यास से पूरी तरह बदल दिया है। नए युग के यथार्थ के निर्माण में उदय की कहानियों की जबर्दस्त भूमिका है। वैविध्यपूर्ण जीवनानुभवों से लैस उदय की कहानियों पर कदाचित जितनी असहमतियाँ और विवाद दर्ज किए गए उतनी किसी और की कहानियों पर नहीं। किन्तु सभी असहमतियों और विवादों को पीछे छोडते हुए उदय प्रकाश ने पश्चिमी मापदंड पर टिकी हिंदी आलोचना की कसौटियों के सामने सदैव एक चुनौती खड़ी की है। 'सुनो कारीगर', 'अबूतर कबूतर', 'रात में हारमोनियम' व 'एक भाषा हुआ करती है'– कविता संग्रहों और 'तिरिछ', 'दरियाई घोडा' और 'अंत में प्रार्थना', 'पालगोमरा का स्कूटर', 'दत्तात्रेय के दुख', 'पीली छतरी वाली लडकी', 'मैंगोसिल' व 'मोहनदास' जैसे कहानी संग्रहों के लेखक उदय प्रकाश ने कई लेखकों पर फिल्में बनाई हैं और बिज्जी की कहानियों पर धारावाहिक भी।

'मोहनदास' उदय प्रकाश की आत्मकथात्मक कृति है। बहुत कम लोग जानते हैं कि लगभग सभी भारतीय भाषाओं और विश्व की आधी दर्जन भाषाओं में अनूदित हो चुकी 'मोहनदास' कहानी उदय प्रकाश ने तब लिखी थी, जब दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रोफेसर के पद के लिए उन्होंने इंटरव्यू दिया था और उन्हें वह नौकरी नहीं दी गयी थी। तब उदय प्रकाश को नौकरी इसलिए नहीं दी गयी थी क्योंकि चयन समिति के एक सदस्य को इस बात पर गहरा एतराज था कि उदय प्रकाश के पास पी.एच.डी. की डिग्री नहीं है। हालांकि तब तक उदय प्रकाश की कहानियों और कविताओं पर देश भर के विश्वविद्यालयों में आधे दर्जन से ज्यादा पी.एच.डी. और एक दर्जन से ज्यादा एम.फिल. की उपाधियां बांटी जा चुकी थीं। इसके अलावा कई विदेशी विश्वविद्यालयों के सिलेबस में उनकी कहानियां जगह पा चुकी थीं और वहां पढ़ायी जा रही थीं। शब्दों के अनूठे शिल्प में बुनी कविताओं और उससे भी ज्यादा अनूठे गद्य शिल्प के लिए जाने जाने वाले उदय प्रकाश का ब्लॉग की दुनिया में पदार्पण एक सुखद घटना है। सन् 2005 में जब हिंदी में कोई ठीक से ब्लॉग का नाम भी नहीं जानता था, उदय प्रकाश ने अपने ब्लॉग की शुरुआत की, लेकिन यह सिलसिला ज्यादा लंबा नहीं चला। लंबे अंतराल के बाद अब फिर उस सफर की शुरुआत हुई है। जिन्होंने 'पालगोमरा का स्कूटर', 'वॉरेन हेस्टिंग्ज का सांड़' और 'तिरिछ' सरीखी कहानियाँ पढ़ी हैं और जो उनके लेखन से वाकिफ हैं, उन्हें ब्लॉग पर उदय जी के लिखे का जरूर इंतजार होगा। ब्लॉग की शुरुआत के पीछे उदय प्रकाश का मकसद एक ऐसे मंच की तलाश थी, जहाँ किन्हीं नियमों और प्रतिबंधों के बगैर उन्मुक्त होकर अपनी कलम को अभिव्यक्त किया जा सके, जहाँ कोई सेंसरशिप न हो, जो कि प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में संभव नहीं है। उदय प्रकाश का मानना है कि एक सच्चा रचनाकार निर्बंध होकर अपने समय का सच लिखना चाहता है।

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2024/13.1.42

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2024); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:13, ISSUE:1(2), JANUARY: 2024
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2024
Publication Date:30th January 2024
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

पहले लेखक डायरियाँ लिखा करते थे। मुक्तिबोध की पुस्तक 'एक साहित्यिक की डायरी' बहुत प्रसिद्ध है। अब टेक्नोलॉजी ने हमें एक नया माध्यम दिया है। हिंदी में ब्लॉग की दुनिया का धीरे–धीरे विस्तार हो रहा है। हमें अपनी बात व्यापक पैमाने पर लोगों तक पहुँचाने के लिए इस माध्यम का इस्तेमाल करना चाहिए।

निजी स्वतंत्रता के आधुनिक विचार के लिए भी ब्लॉग की दुनिया में जगह है। ब्लॉग के माध्यम से कितने सार्थक काम और बहसें हो रही हैं, यह एक अलग मुद्दा है, लेकिन ब्लॉग लेखक को एक निजी किस्म की स्वतंत्रता देता है। उस स्पेस का इस्तेमाल लेखक अपने तरीके से निर्बंध होकर कर सकता है।' हिंदी में ब्लॉगिंग के भविष्य के बारे में उदय प्रकाश का कहना है कि यदि यह माध्यम और सस्ता होकर बड़े पैमाने पर लोगों तक पहुँचता है तो आने वाले कुछ वर्षों में ब्लॉगिंग के कुछ बड़े नतीजे भी सामने आ सकते हैं। यह ज्यादा सार्थक रूप में गंभीर सामाजिक और वैचारिक बहसों का मंच बन सकता है। जिस तेजी के साथ इंटरनेट और ब्लॉग का हिंदी में प्रसार हो रहा है, इस बात की पूरी संभावना हो सकती है।

आज हम 'मुक्तिबोध' से लेकर 'असद जैदी' और 'कुँवर नारायण' तक की कविताएँ उदय प्रकाश के ब्लॉग पर पढ़ सकते हैं। मुक्तिबोध की एक शानदार अप्रकाशित कविता 'अगर तुम्हें सच्चाई का शौक है' का आनंद उदय प्रकाश के ब्लॉग पर उठाया जा सकता है।

'मोहनदास' कहानी आजादी के लगभग साठ साल बाद के हालात का आकलन करती है। यह उस अंतिम व्यक्ति की कहानी है जो बार–बार याद दिलाती है कि सत्ता केंद्रिक व्यवस्था में एक निर्बल, सत्ताहीन और गरीब मनुष्य की अस्मिता तक उससे छीनी जा सकती है। पर यह कहानी प्रतिकार की, प्रतिरोध की कहानी नहीं है। इस कहानी को उत्तर आधुनिक कहानी के रूप में भी देखा और सराहा गया है। 'वर्तिका फिल्म्स' के लिए 'मजहर कामरान' ने इस पर फिल्म बनाई है, जिसकी पटकथा, संवाद आदि ओम निश्चल ने लिखे हैं। हालाँकि फिल्म उस संवेदना को तो नहीं छू पाती, जिसे लक्ष्य कर कहानी लिखी गयी थी, लेकिन कहानी आज के हालात में एक मनुष्य की नियति का आख्यान तो रचती ही है।

कहानी एक कठिन विधा है, भले ही उपन्यास से आकार में यह छोटी होती है और कविता की तुलना में यह गद्य का आश्रय लेती है। फिर भी कविता और उपन्यास के बीच की यह विधा बहुत आसान नहीं है। कहानी को सम्मान कभी मिला ही नहीं। शायद यह एक पुनर्विचार है हमारे समय के विद्वानों का जिन्होंने कहानी को वह प्रतिष्ठा दी है जिसकी वह हकदार रही है। चेखव ने तो कहानियाँ ही लिखीं, उपन्यास नहीं लिखे। प्रेमचंद अपनी कहानियों से ही लोकमान्य में जाने गए, गोदान आदि उपन्यासों से नहीं। निर्मल वर्मा की पहचान भी प्राथमिक तौर पर कहानी से ही बनी। तो इस समय के परिदृश्य कें केंद्र में कहानी है।

आज जब भूमंडलीकरण के दौर में चारों तरफ चकाचौंध पसरी है, जहां आदमी को बेसुमार भौतिक सुख–समृद्धियों की कृत्रिम भूख पैदा की जा रही है, दूसरी तरफ अपने गिरफ्त में लेते हुए आदमियत को खत्म किया जा रहा है संवेदनहीनता की भावना पैदा हो रही है। जहां करुणा, दया जैसी महान इंसानियत के गुण समाप्तप्राय हैं। आज पूरी तरह कॉरपोरेटपरस्ती का दौर आ गया है। वहीं नव–उदारवादी, भूमंडलीकरण, उत्तर आधुनिकता के दौर में सामाजिक–सांस्कृतिक संकट के साथ नए विमर्श भी उभरकर सामने आए हैं। इस परिवेश भावभूमियों, परिस्थितियों को बेहद गहराई, समग्रता में अपनी कहानियों में पिरोने व अभिव्यक्त करने वाले समकालीन कथाकारों में उदय प्रकाश एक बड़ा नाम है जिनकी कहानियों में समकालीन सामाजिक–सांस्कृतिक यथार्थ की पहचान तथा प्रतिरोध की मुखर आवाज सामने आती हैं।

समकालीन समाज में व्यक्ति और संस्कृति का संस्थानीकरण अपने चरमोत्कर्ष पर है। टेक्नोलॉजी की दुनिया में मनुष्य को अर्थवत्ता, गरिमा और अपराजेयता का एहसास कराने वाले सभी परंपरागत सांस्कृतिक माध्यम व्यर्थ घोषित किये जा रहे हैं। भूमंडलीकरण के दौर में उनकी उपयोगिता समाप्त हो गयी है। विश्व बाजार एक नियति है जिसमें मनुष्य नगण्य और गरिमाहीन होने के लिए बाध्य हो गया है।

उदय प्रकाश का कथा साहित्य का फलक व्यापक है। उनकी रचनात्मक संवेदना शहरों तक सीमित नहीं है बल्कि गांव के उन सुदूर इलाकों तक पहुंचती हैं जहां पर देश की मूल जनजातियां निवास करती हैं। उनके कथा संचार से गुजरना

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2024/13.1.42

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2024); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:13, ISSUE:1(2), JANUARY: 2024
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2024
Publication Date:30th January 2024
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

समकालीन भारतीय सामाजिक संरचना, व्यवस्था से गुजरना है जो करोड़ों वंचित समुदायों की अंतरात्मा की आवाज है। उनकी कहानियां एवं कविताएं उस पीड़ा और अनुभव और जादुई यथार्थवाद के प्रयोग से परिपूर्ण हैं, तथा इनमें रोचकता व आकर्षण हैं। उनकी कहानियों का अध्ययन करते समय कड़वे यथार्थ का अनुभव हुआ। उदय प्रकाश की कहानियों में समकालीन समाज और संस्कृति पर मंडराते खतरे, साहित्य और संस्कृति की चुनौतियों, तर्क, इतिहास, कहानी, संस्कृति के डूबते प्रतिरोध की मुखर आवाज सामने आती है।

सभ्यता के विध्वंस की उपनिवेशवादी रणनीतियां में देखा गया है कि पूर्व आधुनिकता के समय जो यह मानते थे कि ब्रिटिश न आये होते तो यहां औद्योगीकरण न हुआ होता, यह बात नहीं थी। मध्ययुग में औद्योगीकरण की निर्माण हो रहा था, जैसे ही उपनिवेशवाद आया उसको झटके से नष्ट कर दिया। औपनिवेशिक आर्थिक नीति लागू किया और यहां के हथकरघा, कृषि उद्योग, शिल्प आदि को पूरी तरह चौपट कर दिया और यहां की स्मृतियों को कैसे नष्ट करने की कोशिश की गयी, जिसपर एडवर्ड सईद, अमर्त्य और सखाराम गणेश देउस्कर आदि ने गहराई से विचार–विमर्श किया है। औपनिवेशिक नीतियों पर ही नवउपनिवेशवाद, भूमंडलीकरण का तंत्र आधारित है। भूमंडलीकरण या उपभोक्तावादी संस्कृति सबसे पहले लोगों के दिमाग पर कब्जा कायम करता है। पूरी दुनिया में शक्तिशाली राष्ट्रों का गरीब मुल्कों के ऊपर सांस्कृतिक राजनीतिक आर्थिक साम्राज्य स्थापित करने की औपनिवेशिक रणनीति अब भी थोड़े से बदले रूप में बदस्तूर जारी है जिसको एडवर्ड सईद नवउपनिवेशवाद के रूप में देखते हैं और इसे सबसे खतरनाक बताते हैं। इधर बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में अस्मिताओं के उभार में प्रमुख रूप से स्त्री, दलित और आदिवासी विमर्श केंद्र में आये हैं। जिसको कथाकार उदय प्रकाश अपनी कहानियों में नायकत्व की भूमिका में रखते हैं। इस अध्याय में उभरते अस्मिताओं के विविध पक्षों का भी अध्ययन किया गया है।

औपनिवेशिक शासन, भौतिक स्थानों पर कब्जा, देशी जनता के मन–मस्तिष्क की पुनर्रचना तथा स्थानीय आर्थिक इतिहासों को पश्चिमी परिप्रेक्ष्य में संग्रथित करके स्थापित और मजबूत होता है। इन बातों से ही वह औपनिवेशिक ढांचा खड़ा होता है जो कि औपनिवेशिक अनुभव के भौतिक, मानवीय और आध्यात्मिक पहलुओं को समेटे रहता है। देशी संस्कृतियों का अवमूल्यन और देशी अभिव्यक्तियों को खामोश करके ही उपनिवेशवाद अपनी विचारधारात्मक वैधता को स्थापित करता है। औपनिवेशिक सामाजिक संकट और हिंदी साहित्य का विहंगावलोकन किया गया है। पश्चिमी देशों और अमेरिका का आर्थिक और भू–राजनैतिक वर्चस्व तीसरी दुनिया के भौगोलिक इलाकों के प्रत्यक्ष नियंत्रण समाप्त होने के बाद भी बना रहा। 1980 के दशक में भूमंडलीकरण, निजीकरण के नीति पर विचार, भूमंडलीकरण और उत्तर आधुनिकता के दौर में उपभोक्तावादी संस्कृति और बाजारवाद समकालीन कथा साहित्य के आलोक में आए और उस पर लिखा जाने लगा। इन विषयों पर अच्छी पकड़ के साथ गहराई से लिखने वाले उदय प्रकाश श्रेष्ठ साहित्यकार हैं।

ये हिंदी के ऐसे प्रमुख गद्य लेखकों में से हैं जिन्होंने कहानी को विश्व स्तर पर पहुंचाया है। इब्बार रब्बी के अनुसार वे हिंदी के 'मार्खेज' हैं। उनकी कहानी समकालीन और भूमंडलीकरण के दौर में हमें अधिक आकर्षित करती है। पाठक वर्ग को सोचने और विचलित करने पर मजबूर करती है। उदय प्रकाश का साहित्यिक चिंतन व्यापक है। उदय प्रकाश उपेक्षित दलित, पिछड़े, आदिवासी, उत्पीड़ित, सामाजिक अस्मिताओं का विश्लेषण करते हैं।

समकालीन पाठकों व आलोचकों के बीच उदय प्रकाश सामाजिक–सांस्कृतिक बदलाव के लिए बेचैन, संवेदनशील वैचारिक साहित्यकार के रूप में है। उदारीकरण के दौर में उनकी कहानियों के माध्यम से समाज के विकृत रूप की शिनाख्त की गयी है।

उदय प्रकाश अपनी कहानियों में समकालीन सामाजिक–सांस्कृतिक समस्याओं को इंगित करते हैं बल्कि उसके निवारण का प्रयास भी करते हैं। वे ऐसे साहित्यकार हैं जो सभी को यह संदेश देना चाहते हैं– आदमी, मरने के बाद कुछ नहीं सोचता। आदमी, मरने के बाद कुछ नहीं बोलता। कुछ नहीं सोचने और कुछ नहीं बोलने पर आदमी, मर जाता है। ऐसे ही समकालीन भारतीय व्यवस्था पर सदियों से वर्चस्व जमाये प्रत्येक क्षेत्र में स्थापित ताकतों से सीधे मुठभेड़ करते हैं। उनकी कहानियों में सांस्कृतिक विद्रूपता और प्रतिरोध की अनुगूँजें तथा उनके कथा–केंद्र में हाशिए के विमर्श निम्नवर्ग के जीवन

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2024); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:13, ISSUE:1(2), JANUARY: 2024
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2024
Publication Date:30th January 2024
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in
Cover Page
DOI: http://ijmer.in.doi./2024/13.1.42

संघर्ष को बेहद सृजनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया गया है उनका जीवन संघर्ष, उनका पसीना, उनकी गरीबी, ताकत, मजबूरियाँ सब कुछ बेहद बारीकी और खूबसूरती से अभिव्यक्त किया गया है।

कहानियों में कथा विन्यास, जादुई यथार्थवाद, घटना प्रधानता, मिथक, इतिहास, स्मृति तथा भाषा की लोकधर्मिता, प्रतीक, बिंब, प्रतीक सांकेतिकता, फैंटेसी, व्यंग्य का उपयोग व्यापक रूप में है। उदय प्रकाश अपने रचनाकर्म में जादुई यथार्थवाद का प्रयोग करते हैं जो कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से हाशिए पर ढकेल दिए गए लोगों की कहानियों–गल्पों के साथ जुड़ा हुआ है। उनका प्रतिनिधित्व करता है।हिंदी कथा–साहित्य में उदय प्रकाश जादुई यथार्थवाद की परंपरा को बढ़ाते हैं।कहानी के प्रचलित मुहावरेध्मापदंडों को तोड़ते हैं। सामाजिक समस्याओं पर तटस्थता के साथ दृष्टि डालते हुए समकालीन कथाकारों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

उदय प्रकाश की चर्चित कहानी 'टेपचू' जो कथा–संग्रह दरियाई घोड़ा में संकलित है। जिसमें 'टेपचू' की जिजीविषा देखकर मन विचलित और आश्चर्य चकित हो जाता है। "ट्राली–स्ट्रेचर में टेपचू की लाश अंदर लायी गयी। डॉ वर्गिस ने लाश की हालत देखी। जगह–जगह थ्री–नाट–थ्री की गोलियां धँसी हुई थी। पूरी लाश में एक सूत जगह नहीं थी, जहां चोट न हो।

उन्होंने अपना मास्क ठीक किया, फिर उस्तरा उठाया। झुके और तभी टेपचू ने अपनी आंखें खोलीं। धीरे से कराहा और बोला,– "डॉक्टर साहब, ये सारी गोलियां निकाल दो। मुझे बचा लो। मुझे इन्हीं कुत्तों ने मारने की कोशिश की है।" डॉक्टर वर्गिस के हाथ से उस्तरा छूटकर गिर गया। एक घिघियाई हुई चीख उनके कंठ से निकली और वे ऑपरेशन रूम से बाहर की ओर भागे।" लेखक ने इसी जिजीविषा को मजदूर के जीवन से जोड़ते हुए कहा है कि– जीवन की वास्तविकता किसी भी काल्पनिक साहित्यिक कहानी से ज्यादा हैरत अंगेज होती है।

जगदीश्वर चतुर्वेदी के अनुसार – उदय प्रकाश की कहानियां मुक्तिबोध की कहानी कला से काफी मिलती हैं। इसके अलावा उनकी कहानियों में टेलीविजन की चाक्षुष भाषिक चमक है। भाषायी प्रयोगों में चाक्षुष भाषा के सफल प्रयोग करने में उदय प्रकाश सफल रहे हैं। कहानी में चाक्षुष भाषा का इसके पहले प्रेमचंद के यहां प्रयोग मिलता है। प्रेमचंद ने सिनेमा की भाषा को कहानी की भाषा बनाया था। वहीं उदयप्रकाश की कहानियों में टी.वी. की भाषा का प्रयोग मिलता है। ये दोनों कथाकार दो भिन्न मीडिया युग की देन हैं। इसके अलावा वृत्तचित्र की भाषा को कहानी की अपरिहार्य भाषा बनाने में उदयप्रकाश को सफलता मिली है।

उदयप्रकाश की कहानियों की विषयवस्तु में उपभोक्ता समाज के यथार्थ की प्रधानता है। उन्होंने सामान्य जीवन पर उपभोक्ता समाज के यथार्थों का पड़नेवाले प्रभावों को बहुत बारीकी एवं कलात्मक्ता से दिखाया है। कुछ कहानियां जो मुख्यतः इसी विषयवस्तु पर आधारित है जैसे 'वारेन हेस्टिंग्स का साँड', 'पॉल गोमरा का स्कूटर', 'तिरिछ', 'मेंगोसिल' आदि। कुछ ऐसी है जो उपभोक्ता समाज पर केंद्रित नहीं है, पर उन कहानियों के चरित्र इससे प्रभावित लगते हैं। जैसे 'दत्तात्रेय का दुःख', 'और अंत में प्रार्थना', मोहनदास आदि। उनकी कहानियों की विशेषता है कि उपभोक्ता समाज हो या जीवन की कोई और बिडंबनायुक्त व्यवस्था, उदयप्रकाश इसमें किसी न किसी स्तर पर प्रतिरोध की सृष्टि करते हैं। उदय प्रकाश की कहानियाँ भारतीय समाज और संस्कृति की तह तक जाती हैं उनकी जड़े अपने वक्त से अपने समाज से गहरे जुड़ी हुई हैं। समकालीन कहानी की उनकी कहानियाँ नींव भी हैं और शिखर भी। कहना न होगा कि किस्सगोई को उदय प्रकाश ने अपने अनुभवों अपनी कला साधना अपने जादुई भाषा की ताकत से बेहद समृद्ध किया है। उन्हें समकालीन हिंदी कहानी का प्रेमचंद प्रेमचंद कहे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2024/13.1.42

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2024); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:13, ISSUE:1(2), JANUARY: 2024
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2024
Publication Date:30th January 2024
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

संदर्भ सूची :–

1. उदय प्रकाश– दरियाई घोड़ा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1982

2. उदय प्रकाश, तिरिछ, वाणी प्रकाशन,दिल्ली, 2001.

3. उदय प्रकाश, ‘३और अंत में प्रार्थना’, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2006.

4. उदय प्रकाश, पालगोमरा का स्कूटर, वाणी प्रकाशन,दिल्ली, 2006.

5. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2005.

6. उदय प्रकाश, दत्तात्रेय का दुख, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002.

7. उदय प्रकाश, अरेबा परेबा, पेंगुइन,दिल्ली, 2006.

8. उदय प्रकाश, मेंगोसिल, पेंगुइन, दिल्ली, 2006.

9. उदय प्रकाश, मोहनदास, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2006.

10 राजेंद्र यादव, कहानी : अनुभव और अभिव्यक्ति, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2000.

11. देवीशंकर अवस्थी, नयी कहानी संदर्भ और प्रकृति, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2002.

12. मार्कण्डेय, कहानी की बात, लोकभारती प्रकाशन,दिल्ली, 1984.